

नरेन्द्र मालवीय

नरेन्द्र मालवीय हिन्दी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभाशाली साहित्यकार हैं। हिन्दी साहित्य में निबंध, कहानी, एकांकी एवं कविता में अपना योगदान दिया है। सरल और सहज भाषा उनके साहित्य की एक विशेषता रही है। मार्मिक भाषा में गहन बात को सरलता से पेश करते हैं।

यह एक सरल और सुबोध रचना है। इस कविता को एक कहानी के आधार पर लिखा गया है। वह कहानी 'बुक ऑफ नॉल्लिज' से ली गई है। इसे विश्व का एक श्रेष्ठ संवाद-काव्य माना जाता है।

सुनो भाइयो, तुम्हें सुनाते, आज एक प्राचीन कहानी ।
जो है अति सुंदर, अति अद्भुत, सचमुच कहानियों की रानी ॥
पुण्यभूमि काशी की महिमा, चारों दिशि में थी अति गुंजित ।
देवों सहित देवपति उसको, लखकर होते थे अति हर्षित ॥
गुजर रहे थे इन्द्र एक दिन, जब कि निकट के निर्जन वन से ।
देखा एक पेड़ अति भारी, सूखा, निर्जीवित-सा तन से ॥
उसके एक खोखले में था तोता एक बहुत ही सुंदर ।
हुआ इन्द्र को बेहद अचरज, उसको सूखे तरु पर लखकर ॥
पूछा तुरंत उन्होंने उससे - 'क्या न मूर्खता है यह भारी ।
इस सूखे तरु पर तू रहता बन करके अनजान, अनारी ॥
हरा-भरा तरु कहाँ नहीं है, क्या इस विस्तृत सुंदर वन में ?
भला यहीं रहने में तूने सोचा है क्या हित निज मन में ?'
तोता बोला - 'महाराज, यह तरु पहले था बेहद सुंदर ।
सारे वन में एकमात्र था सबसे अच्छा, सबसे मनहर ॥
जैसा था यह सबसे सुंदर, वैसा ही था यह बलशाली ।
यह ही था इस वन की शोभा, भाग्यवान, अति गौरवशाली ॥
चिड़िया, तोते, कोयल, मैना, सबको ही यह अति प्यारा था ।
महाराज, यह ही कुरूप तरु, शोभा में सबसे न्यारा था ॥
मैं जन्मा हूँ इस पर, जब इसकी शोभा थी नई-निराली ।
अतः मुझे प्राणों से भी प्यारी है इसकी डाली-डाली ॥
इसकी मोदमयी छाया में मैंने था निज होश सम्हाला ।
यह है मुझको गाना, मुसकाना, उड़ना सिखलानेवाला ॥
बचपन से ले करके अब तक इसने दी है मुझको छाया ।
मैंने हरदम इसको ही सुख-दुख का सच्चा साथी पाया ॥
किंतु आह, कुछ दिन पहले आया वन में एक शिकारी ।
उसके विष से बुझे बाण ने इस पर ढा दी आफत भारी ॥
विष के कारण सूख रहा है तब से यह तरुवर दिन-प्रतिदिन ।
अब तो इसके साथ-साथ ही मेरा भी होगा अंतिम क्षण ॥
बचपन के साथी को तजकर, भला कहीं मैं जा सकता हूँ ?

यदि जाऊँ भी, तो क्या सुख, संतोष, शांति मैं पा सकता हूँ ?
 इससे अच्छा है, मैं इसके दुःख में थोड़ा हाथ बटाऊँ ।
 और अंत में सुख से इसके संग-संग मैं भी मर जाऊँ ॥’
 दंग रह गये इन्द्रदेव तोते की यह सब बातें सुनकर ।
 फिर, तोते से बोले वे यों तुरंत अत्यधिक हर्षित होकर-
 ‘मैं प्रसन्न हूँ तुझसे पंछी, सुफल हुआ है तेरा जीवन ।
 माँग तुरंत वर कोई मुझसे, पूर्ण करूँगा मैं इस ही क्षण ॥’
 तोता बोला-‘देव, यही है अभिलाषा मेरे जीवन की ।
 हरा-भरा कर दें यह तरुवर, जो है शोभा सारे वन की ॥’
 कहा इन्द्र ने - ‘एवमस्तु !’ और तरु ने फिर नवजीवन पाया ।
 शोभा नई, निराली सुंदरता लेकर वह फिर लहराया ॥

शब्दार्थ

प्राचीन पुरानी पुण्यभूमि पवित्रभूमि दिशि दिशा निर्जन विरान खोखला पोला, कमजोर अचरज आश्चर्य तरु वृक्ष निज अपना, स्वयं कुरूप बदसूरत तजकर त्याग करके अभिलाषा इच्छा लखकर देखकर

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

- (1) इन्द्र कहाँ से गुजर रहे थे ?
- (2) इन्द्र ने खोखले वृक्ष में क्या देखा ?
- (3) पेड़ क्यों सूख गया था ?
- (4) पेड़ पर किसने आफ़त ढा दी थी ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

- (1) सूखे पेड़ पर तोते को देख इन्द्र को क्यों आश्चर्य हुआ ?
- (2) तोते ने उस सूखे वृक्ष पर रहने का कारण क्या बतलाया ? क्या आप उसे ठीक समझते हो ?
- (3) तोते के उत्तर का इन्द्रदेव पर क्या प्रभाव पड़ा ? और उसका फल क्या हुआ ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तार उत्तर लिखिए :

- (1) तोते ने उस पेड़ से अपने अत्यधिक लगाव के क्या-क्या कारण बतलाए हैं ?
- (2) तोता और इन्द्र का संवाद अपने शब्दों में लिखिए ।

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

विस्तृत, गौरवशाली, मोदमयी, एवमस्तु

5. शब्दसमूह के लिए एक-एक शब्द लिखिए :

- (1) जहाँ मनुष्य न हो
- (2) जिसमें बल न हो
- (3) देवों के अधिपति
- (4) भू के पति

योग्यता-विस्तार

- इस कथा-काव्य का कहानी में रूपांतर कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- अन्य कथाकाव्य ढूँढ़कर छात्रों को सुनाइए ।

